2)

“समता से सामर्थ्य तक का सफर: अंबेडकर विचारों पर मंथन, ‘भीम सप्ताह’ की नई पहल के साथ विश्वविद्यालय में गूंजा सामाजिक न्याय का संदेश :

अजमेर, 15 अप्रैल। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में डॉ. भीमराव अंबेडकर की 135वीं जयंती का अवसर इस बार केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं रहा, बल्कि यह विचारों, विमर्श और सामाजिक न्याय की गहन चर्चा का एक सशक्त मंच बन गया। विश्वविद्यालय के स्वराज सभागार में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी “अंबेडकर दृष्टि : समता से सामर्थ्य” ने यह संदेश स्पष्ट कर दिया कि अंबेडकर का चिंतन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना स्वतंत्र भारत के निर्माण के समय था। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में विधायक एवं प्रबंध मंडल सदस्य Dr. Lalaram Bairwa उपस्थित रहे। सभागार में मौजूद वातावरण केवल औपचारिक भाषणों तक सीमित नहीं था, बल्कि हर वक्ता के विचारों ने सामाजिक न्याय, समता और शिक्षा के नए अर्थ खोल दिए। संगोष्ठी का सबसे प्रभावशाली क्षण तब रहा जब मुख्य वक्ता जसवंत खत्री ने “समानता” और “समता” के बीच बारीक लेकिन महत्वपूर्ण

अंतर को सरल शब्दों में समझाया। उन्होंने कहा कि समाज में सभी को एक जैसा देना समानता तो हो सकती है, लेकिन न्याय नहीं। असली न्याय तब शुरू होता है जब व्यक्ति की जरूरत के अनुसार अवसर और संसाधन दिए जाएं। उनके अनुसार, समरसता इस पूरी व्यवस्था की नींव है—और इसके बिना न तो समता संभव है और न ही सामाजिक न्याय। उनके इस विचार ने सभागार में गहरी सोच और मौन सहमति का माहौल बना दिया। खत्री ने आगे कहा कि समाज में "सामर्थ्य" केवल आर्थिक मजबूती नहीं, बल्कि सम्मान, अवसर, भागीदारी और सुरक्षा का संयुक्त स्वरूप है। उन्होंने यह भी कहा कि हर व्यक्ति समाज में सिर्फ जीवित नहीं रहना चाहता, बल्कि सम्मान के साथ जीना चाहता है, और यही वास्तविक विकास की परिभाषा है। डॉ. अंबेडकर के विचारों को याद करते हुए उन्होंने संविधान के तीन स्तंभ—स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व—में बंधुत्व को सबसे महत्वपूर्ण बताया, क्योंकि वही समाज को जोड़कर रखता है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. लालाराम बैरवा ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि एक जनप्रतिनिधि का दायित्व केवल प्रशासनिक या राजनीतिक नहीं होता, बल्कि समाज में सकारात्मक सोच और संवेदनशील नेतृत्व विकसित करना भी उसकी जिम्मेदारी है। उन्होंने अपने शिक्षक जीवन को याद करते हुए कहा कि सेवा की भावना ही उन्हें सार्वजनिक जीवन में लेकर आई। उनका संबोधन सरल लेकिन प्रभावशाली रहा, जिसने युवाओं को प्रेरित किया। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. अंबेडकर को केवल संविधान निर्माता नहीं, बल्कि आधुनिक भारत का वास्तविक "निर्माता" बताया। उन्होंने कहा कि अंबेडकर का जीवन संघर्ष, ज्ञान और सामाजिक परिवर्तन की जीवंत कहानी है। उन्होंने यह भी कहा कि शोध और शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज में वास्तविक बदलाव लाना होना चाहिए। अंबेडकर की प्रसिद्ध कृति "The Problem of the Rupee" का उल्लेख करते हुए उन्होंने इसे भारतीय आर्थिक चिंतन की महत्वपूर्ण नींव बताया। इसी अवसर पर कुलगुरु ने एक महत्वपूर्ण घोषणा भी की—अब से विश्वविद्यालय में हर वर्ष "भीम सप्ताह" आयोजित किया जाएगा। इस दौरान व्याख्यान, संगोष्ठियाँ, प्रतियोगिताएँ और जागरूकता कार्यक्रम होंगे, ताकि विद्यार्थी डॉ. अंबेडकर के विचारों को केवल पढ़ें नहीं, बल्कि उन्हें समझकर जीवन में उतार सकें। कार्यक्रम का एक और आकर्षण रहे विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत प्रतियोगिताओं के परिणाम। शोधपीठ निदेशक Prof. Shiv Prasad ने बताया कि निबंध, वाद-विवाद और पोस्टर प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। निबंध प्रतियोगिता में चित्राशी जौनवाल प्रथम, भूमिका डाबोला द्वितीय और उदय पुरोहित तृतीय रहे। वाद-विवाद प्रतियोगिता में अंशुल शर्मा ने प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि प्रेमचंद मेघवंशी और प्रमोद चौहान क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे। पोस्टर प्रतियोगिता में भारती पुरोहित ने पहला स्थान प्राप्त किया, रिंकू कंवर राठौर दूसरे और भूमिका डाबोला तीसरे स्थान पर रहीं। मंच पर इन सभी विजेताओं को सम्मानित किया गया, जिससे पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा। अंत में कुलसचिव Kailash Chandra Sharma ने सभी अतिथियों, वक्ताओं और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। पूरा आयोजन केवल एक शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं रहा, बल्कि यह एक ऐसा मंच बन गया जहाँ डॉ. अंबेडकर के विचारों ने वर्तमान समय से सीधा संवाद किया और यह संदेश दिया कि समता, न्याय और बंधुत्व ही किसी भी समाज की वास्तविक ताकत हैं।

1)

वेद और विज्ञान के संगम से विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त होगा: एम.डी.एस.यू. में राष्ट्रीय संगोष्ठी :

अजमेर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के वैदिक वाङ्मय विभाग में "वेद-वेदांग और विकसित भारत" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ने प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिक सोच के बीच गहरे संबंधों को नए दृष्टिकोण के साथ सामने रखा। कार्यक्रम में विद्वानों, शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों की बड़ी भागीदारी रही, जिससे यह आयोजन एक गंभीर बौद्धिक विमर्श का रूप ले सका। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता, दिल्ली के प्रख्यात वैज्ञानिक, चिंतक एवं प्रधानमंत्री कार्यालय के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. ओम प्रकाश पांडेय ने अपने विस्तृत व्याख्यान में वेदों की वैज्ञानिकता को स्पष्ट करते हुए कहा कि 'ॐ' केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि एक ब्रह्मांडीय ध्वनि है, जो पूरे सृष्टि तंत्र की ऊर्जा और कंपन का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने बताया कि मनुष्य ध्वनि को सीधे नहीं सुनता, बल्कि उसकी आवृत्ति को ग्रहण करता है, और 'ॐ' का शुद्ध उच्चारण चेतना के उच्च स्तर तक पहुंचने का माध्यम बन सकता है। उन्होंने वेदों को ज्ञान-विज्ञान का मूल स्रोत बताते हुए कहा कि इनमें खगोलशास्त्र, जीवविज्ञान, ब्रह्मांड विज्ञान और चेतना से जुड़े अनेक सिद्धांत समाहित हैं। प्राचीन ऋषियों ने इन सिद्धांतों को ध्यान और साधना के माध्यम से अनुभव किया था। डॉ. पांडेय ने वेदों और आधुनिक विज्ञान के बीच संबंध

स्थापित करते हुए प्रकाश की गति, गुरुत्वाकर्षण, ब्रह्मांड की संरचना, डीएनए और सृष्टि की उत्पत्ति जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की और बताया कि इनका आधार भारतीय परंपरा में पहले से मौजूद रहा है। वेदांगों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष वेदों को समझने के आवश्यक उपकरण हैं। इनके माध्यम से ही वेदों के गूढ़ अर्थों को समझा जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि वेदों की सही व्याख्या के लिए केवल भाषा ज्ञान पर्याप्त नहीं, बल्कि शोध और अनुभव आधारित दृष्टिकोण आवश्यक है। अपने संबोधन में उन्होंने आधुनिक विज्ञान में भी अंधविश्वास की संभावना की ओर संकेत करते हुए कहा कि हर सिद्धांत को तर्क और प्रयोग के आधार पर परखना चाहिए। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने आत्मविकास पर जोर दिया और कहा कि हर व्यक्ति में विशिष्ट क्षमता होती है, जिसे पहचानकर उसे विकसित करना चाहिए। उन्होंने मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त को "आंतरिक सॉफ्टवेयर" के रूप में समझाते हुए चेतना के उच्च स्तर 'प्रज्ञान' तक पहुंचने की आवश्यकता बताई। पंचकोश–अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय–की अवधारणा को सरल भाषा में समझाते हुए उन्होंने समग्र व्यक्तित्व विकास का मार्ग प्रस्तुत किया। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे केवल डिग्री तक सीमित न रहें, बल्कि शोध, अनुभव और अनुशासन के माध्यम से अपने ज्ञान को गहराई दें। "I read, I forget; I experience, I understand" के माध्यम से उन्होंने अनुभव आधारित शिक्षा को अधिक प्रभावी बताया। वर्तमान शिक्षा प्रणाली की तुलना उन्होंने रेशम के कीड़े के जाल से करते हुए कहा कि इसमें अधिकांश लोग उलझ जाते हैं, जबकि कुछ ही लोग इससे बाहर निकलकर अपनी वास्तविक क्षमता को प्राप्त कर पाते हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वासुदेव देवनानी ने अपने संबोधन में कहा कि विकसित भारत केवल आर्थिक प्रगति का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक मूल्यों के संतुलन से ही संभव है। उन्होंने भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा के माध्यम से नैतिकता, सामाजिक संवेदनशीलता और राष्ट्रभावना का विकास होना चाहिए। उन्होंने युवाओं से वेदांत के मूल्यों को अपनाकर आत्मनिर्भर और संस्कारित भारत के निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि वेद और वेदांग जीवन में प्रयुक्त होने वाली क्रियाशील बुद्धि हैं और इनका अध्ययन आधुनिक भारत के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि औपनिवेशिक प्रभाव और पाश्चात्य ज्ञान के अंधानुकरण के कारण भारतीय ज्ञान परंपरा को उपेक्षित किया गया, जिसे अब पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। कुलगुरु ने शिक्षा में अंतःविषय, बहुविषय और अंतर्विषय दृष्टिकोण अपनाने पर बल देते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान प्रणाली मूलतः समग्र रही है, जिसमें ज्ञान और कौशल का संतुलन था। उन्होंने विकसित भारत की अवधारणा को "कल्पना, सक्षम बनाना और क्रियान्वयन" के तीन चरणों से जोड़ते हुए कहा कि किसी भी विचार को थोपने के बजाय उसे आत्मसात करना आवश्यक है। उन्होंने यह भी कहा कि कोई भी राष्ट्र अपनी जड़ों से कटकर विकसित नहीं हो सकता। कार्यक्रम की शुरुआत वैदिक वाङ्मय विभाग के संकायाध्यक्ष प्रोफेसर सुभाष चंद्र द्वारा विषय प्रवर्तन से हुई। कार्यक्रम का संचालन अंजू अग्रवाल ने किया, जबकि कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सीआरपीएफ के श्री सुरेश कुमार और कोलकाता से आए ज्योतिषाचार्य श्री राकेश पांडे की विशेष उपस्थिति रही। संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, विद्यार्थी और शोधार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। यह आयोजन इस बात का सशक्त उदाहरण बना कि भारत के विकास का मार्ग उसकी प्राचीन ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान के समन्वय से ही प्रशस्त हो सकता है।

3)

“एमडीएसयू में तैयारियों का माहौल गर्म: अंबेडकर जयंती और ‘वेद-वेदांग’ संगोष्ठी को लेकर कुलगुरु ने बदली अकादमिक दिशा की रूपरेखा” :

अजमेर, 13 अप्रैल 2026।महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर इन दिनों दो बड़े अकादमिक आयोजनों की तैयारियों को लेकर पूरी तरह सक्रिय नजर आ रहा है। डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती (15 अप्रैल) और “वेद-वेदांग एवं विकसित भारत” विषय पर होने वाली राष्ट्रीय संगोष्ठी (16 अप्रैल) को लेकर विश्वविद्यालय प्रशासन ने तैयारियों की रफ्तार बढ़ा दी है। इसी क्रम में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई, जिसने पूरे आयोजन की दिशा और दृष्टि को स्पष्ट कर दिया। बैठक का माहौल केवल औपचारिक निर्देशों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें यह स्पष्ट संदेश दिया गया कि ये दोनों आयोजन केवल कार्यक्रम नहीं, बल्कि विचारों और ज्ञान के आदान-प्रदान का जीवंत मंच बनेंगे। कुलगुरु ने कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य सिर्फ आयोजन करना नहीं, बल्कि ऐसे अकादमिक वातावरण का निर्माण करना है जहाँ विद्यार्थी और शिक्षक मिलकर नए विचारों को जन्म दे सकें। “वेद-वेदांग एवं विकसित भारत ” विषय पर होने वाली संगोष्ठी को लेकर कुलगुरु ने विशेष रूप से जोर देते हुए कहा कि यह आयोजन भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विकास दृष्टि के बीच एक सेतु का कार्य करेगा। उन्होंने सभी विभागों को निर्देश दिया कि वे अपने विद्यार्थियों और शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें, ताकि यह संगोष्ठी केवल एक कार्यक्रम न रहकर एक गंभीर अकादमिक संवाद में बदल सके। इसी दौरान डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती समारोह को लेकर भी महत्वपूर्ण चर्चा हुई। कुलगुरु ने कहा कि बाबा साहेब के विचार आज भी समाज की दिशा तय करने में उतने ही प्रासंगिक हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि आने वाले समय में अंबेडकर जयंती को केवल एक दिन के कार्यक्रम तक सीमित न रखते हुए इसे “भीम सप्ताह” के रूप में मनाया जाए। इस दौरान व्याख्यान, प्रतियोगिताएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित करने की योजना है, जिससे विद्यार्थियों में सामाजिक न्याय और समानता की समझ और गहरी हो सके। कुलगुरु ने इस प्रस्ताव को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी शोधपीठ निदेशक प्रो. शिव प्रसाद को सौंपी, ताकि इसे औपचारिक रूप दिया जा सके। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इन आयोजनों का असली उद्देश्य केवल मंच सजाना नहीं, बल्कि विश्वविद्यालय के शैक्षणिक ढांचे में भारतीय ज्ञान परंपरा और सामाजिक चेतना को मजबूत करना है। बैठक में एक और महत्वपूर्ण पहलू सामने आया–कार्यप्रणाली को अधिक व्यवस्थित और प्रभावी बनाना। इसके लिए कुलगुरु ने छोटे-छोटे कार्यदल (टीमों) के गठन के निर्देश दिए, ताकि हर जिम्मेदारी स्पष्ट हो और काम समय पर पूरा हो सके। उन्होंने सभी विभागों से आपसी समन्वय के साथ कार्य करने का आह्वान किया, जिससे आयोजन में किसी प्रकार की बाधा न आए। बैठक के अंत में यह स्पष्ट महसूस किया गया कि विश्वविद्यालय अब केवल आयोजनों की तैयारी नहीं कर रहा, बल्कि एक नई अकादमिक संस्कृति की नींव रख रहा है, जहाँ विचार, शोध और सामाजिक चेतना साथ-साथ आगे बढ़ेंगे।

4)

“भाषा बनी सेतु, संस्कृति बनी पहचान: एमडीएसयू में सिंधी भाषा दिवस पर गूंजा विरासत और आत्मसम्मान का संदेश” :

अजमेर, 10 अप्रैल 2026। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर का वातावरण उस दिन केवल एक अकादमिक आयोजन का साक्षी नहीं था, बल्कि भाषा, संस्कृति और पहचान के गहरे भावों से जुड़ी एक जीवंत यात्रा का हिस्सा बन गया था। सिंधु संस्कृति एवं सिंधु शोध पीठ के तत्वावधान में आयोजित सिंधी भाषा दिवस पर एक दिवसीय संगोष्ठी ने यह संदेश स्पष्ट कर दिया कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि एक पूरी सभ्यता की आत्मा होती है। यह आयोजन उस ऐतिहासिक क्षण की स्मृति में किया गया, जब 10 अप्रैल 1967 को सिंधी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान मिला था। उसी ऐतिहासिक निर्णय की याद में हर वर्ष यह दिन भाषा और संस्कृति के सम्मान के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम ने इस अवसर को केवल औपचारिकता नहीं रहने दिया, बल्कि इसे एक विचारोत्तेजक सांस्कृतिक उत्सव में बदल दिया। कार्यक्रम की शुरुआत स्वागत संबोधन से हुई, जिसमें डॉ. राजू शर्मा ने सिंधी भाषा की ऐतिहासिक यात्रा को शब्दों में पिरोते हुए बताया कि यह भाषा सदियों से व्यापार, साहित्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का एक मजबूत माध्यम रही है। उन्होंने कहा कि आज के समय में भाषा संरक्षण केवल अकादमिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्तित्व की आवश्यकता बन चुका है। इसके बाद मंच पर आए मुख्य वक्ता प्रो. हासो दादलानी ने अपने प्रभावशाली संबोधन से सभागार में एक गंभीर और भावनात्मक माहौल बना दिया। उन्होंने सिंधी भाषा की उत्पत्ति से लेकर उसके समृद्ध साहित्यिक विकास तक का विस्तृत वर्णन किया। उनके अनुसार, सिंधी भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक प्रवाह है, जो पीढ़ियों को जोड़ता है और पहचान को जीवित रखता है। उन्होंने कहा कि जब कोई भाषा समाप्त होती है, तो उसके साथ एक पूरी सोच, एक पूरी परंपरा और एक पूरी स्मृति भी समाप्त हो जाती है। विशिष्ट अतिथि डॉ. चंद्रप्रकाश दादलानी ने विभाजन के बाद सिंधी समुदाय के संघर्षों को याद करते हुए कहा कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद भाषा और संस्कृति को बचाए रखना एक अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने कहा कि सिंधी समाज ने यह साबित किया है कि भाषा केवल बोलने का साधन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और अस्तित्व की पहचान है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे अपनी भाषाई जड़ों को समझें और उन्हें अगली पीढ़ी तक पहुँचाने की जिम्मेदारी निभाएँ। कार्यक्रम की अध्यक्षता सिंधु शोध पीठ के निदेशक प्रो. सुभाष चंद्र ने की। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा सिंधी भाषा और संस्कृति के संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों को विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में भाषाई अध्ययन के क्षेत्र में अनेक नए अवसर सामने आ रहे हैं और विद्यार्थियों को इन्हें गंभीरता से अपनाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि भाषा केवल अध्ययन का विषय नहीं, बल्कि जीवन को समझने का एक माध्यम है। संगोष्ठी के दौरान वक्ताओं ने इस बात पर

विशेष जोर दिया कि भाषाएँ समाज को जोड़ने वाली सबसे मजबूत कड़ी होती हैं। सिंधी भाषा अपनी मधुरता, समृद्ध शब्दावली और ऐतिहासिक गहराई के कारण भारतीय भाषाई परंपरा में एक विशिष्ट और सम्मानित स्थान रखती है। कार्यक्रम में सबसे भावनात्मक क्षण तब आया जब विभाजन के बाद भी सिंधी समुदाय द्वारा अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखने के प्रयासों का उल्लेख किया गया। वक्ताओं ने कहा कि यह संघर्ष इस बात का प्रमाण है कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मा और पहचान का आधार होती है।विद्यार्थियों की सक्रिय और उत्साही भागीदारी ने पूरे आयोजन को जीवंत बना दिया। उनकी उपस्थिति से यह स्पष्ट हुआ कि नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूक हो रही है और उसे समझने की दिशा में आगे बढ़ रही है। कई विद्यार्थियों ने चर्चा में भाग लेकर यह दर्शाया कि भाषा केवल पुस्तकों तक सीमित विषय नहीं, बल्कि जीवन से जुड़ा हुआ अनुभव है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नेमीचंद चंद तंबोली ने प्रभावशाली ढंग से किया, जिससे पूरा आयोजन सुव्यवस्थित और रोचक बना रहा। अंत में सिंधु शोध पीठ के सदस्य सचिव दिलीप शर्मा ने सभी अतिथियों, वक्ताओं, शिक्षकों और विद्यार्थियों का आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम का समापन किया। यह संगोष्ठी केवल एक शैक्षणिक आयोजन नहीं रही, बल्कि यह एक ऐसा सांस्कृतिक अनुभव बन गई जिसने यह याद दिलाया कि भाषा यदि जीवित है, तो संस्कृति जीवित है–और संस्कृति जीवित है, तो पहचान हमेशा अमर रहती है।

5)

डिजिटल बदलाव की नई मिसाल: एमडीएसयू की विद्यार्थी-केंद्रित वेबसाइट का राज्यपाल ने किया शुभारंभ :

राजस्थान में उच्च शिक्षा को आधुनिक और अधिक सुगम बनाने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागडे ने जयपुर के लोकभवन में महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय (एमडीएसयू) की नई वेबसाइट का औपचारिक शुभारंभ किया। इस नई वेबसाइट को विशेष रूप से विद्यार्थियों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है, जिससे शैक्षणिक सेवाएं पहले से अधिक सरल और पारदर्शी बन सकें। लोकार्पण के दौरान राज्यपाल ने कहा कि आज के दौर में शिक्षा को तकनीक से जोड़ना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय की उस पहल की सराहना की, जिसके माध्यम से प्रवेश, पाठ्यक्रम, परीक्षा, परिणाम जैसी सभी महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं को ऑनलाइन और पारदर्शी बनाया जा रहा है। उनके अनुसार, ऐसे प्रयास न केवल छात्रों को सुविधा देते हैं, बल्कि भारतीय विश्वविद्यालयों को वैश्विक स्तर पर मजबूत पहचान भी दिलाते हैं। कार्यक्रम में कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने विश्वविद्यालय में हाल के महीनों में हुए बदलावों और नवाचारों की जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि एमडीएसयू तेजी से 'जीरो कार्बन कैम्पस' की दिशा में आगे बढ़ चुका है और यहां पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही, भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक शिक्षा और शोध के साथ जोड़कर नई सोच विकसित की जा रही है। विश्वविद्यालय ने कई क्षेत्रों में उल्लेखनीय सुधार किए हैं, जिनमें शैक्षणिक ढांचे में बदलाव, ई-गवर्नेंस के जरिए प्रशासनिक पारदर्शिता, स्टार्टअप और उद्यमिता को बढ़ावा, सामाजिक जिम्मेदारी के तहत गांवों से जुड़ाव और समावेशी शिक्षा के प्रयास शामिल हैं। इन पहलों का उद्देश्य छात्रों को बेहतर अवसर

प्रदान करना और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करना है। राज्यपाल ने इन उपलब्धियों की सराहना करते हुए एमडीएसयू को राज्य के अन्य विश्वविद्यालयों के लिए प्रेरणास्रोत बताया। उन्होंने कहा कि इस तरह के नवाचार शिक्षा को अधिक उपयोगी, समावेशी और प्रतिस्पर्धी बनाते हैं। इस मौके पर कई वरिष्ठ अधिकारी और विश्वविद्यालय के पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विश्वविद्यालय प्रशासन और तकनीकी टीम की अहम भूमिका रही। नई वेबसाइट के जरिए अब छात्रों, अभिभावकों और शोधार्थियों को एक ही प्लेटफॉर्म पर सभी जरूरी जानकारियां और सेवाएं आसानी से मिल सकेंगी। यह पहल शिक्षा के क्षेत्र में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने के साथ-साथ डिजिटल भारत के सपने को भी साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।